पापमोचनी एकादशी — चयनित पूर्ण कथा का पुनर्कथन

Papmochani Ekadashi Katha — Complete Selected Chapter Retelling

Source: Sanskrit Wikisource contributors — complete chapter 46, controlling revision 336427. Also compared: Wikisource revision API — complete controlling wikitext; Creative Commons Attribution–ShareAlike 4.0 — adaptation licence; Wisdomlib Sanskrit chapter 46 — full electronic comparison; Wisdomlib / N. A. Deshpande chapter 46 — whole English comparison only; prose not copied; Wikisource rightsinfo — site-wide CC BY-SA 4.0 reuse basis.

Valkala's own retelling of the katha in Padma Purana, Uttara Khanda 6.46.1–49, Sanskrit Wikisource revision 336427, not a transcription of the original text.

प्रश्न, चैत्ररथ और काम का रूपक

KATHA 6.46.1–14

युधिष्ठिर आमलकी की महिमा सुनकर कृष्ण से चैत्र कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम पूछते हैं। कृष्ण मान्धाता के प्रश्न पर लोमश का कथन सुनाते हैं। मान्धाता लोगों के कल्याण के लिए नाम, विधि और फल जानना चाहते हैं। लोमश इसे पापमोचनी कहते हैं और पिशाच-अवस्था दूर करने, इच्छित फल, सिद्धि, शुभता और धर्म देने की धार्मिक प्रशंसा करते हैं।

वसंत में चैत्ररथ वन भ्रमरों से भरा है। अप्सराएँ, गंधर्व-कन्याएँ और किन्नर वाद्यों के साथ आनंद लेते हैं; इन्द्र के नेतृत्व में देव भी विहार करते हैं। वन को अनुपम सुखद कहा गया है, और अनेक ऋषि वहीं तप करते हैं। वहाँ ब्रह्मचारी मेधावी रहते हैं। अप्सरा मंजुघोषा उन्हें आकर्षित करना चाहती हैं, लेकिन भय के कारण आश्रम से एक क्रोश दूर रहकर मधुर गायन और विपंचिका-वादन करती हैं। उनके फूल और चन्दन का भी वर्णन है; क्रोश को आधुनिक दूरी या यात्रा-मार्ग में नहीं बदला गया।

मन से उत्पन्न काम शिवभक्त ऋषियों को जीतना चाहता है। मंजुघोषा के शरीर को उसका युद्ध-रूपक बनाया गया है: भौंहें धनुष के छोर, कटाक्ष उसकी डोरी, पलकों सहित आँखें बाण और वक्ष युद्ध-मंडप हैं। मंजुघोषा काम की सेना कही जाती हैं। यह पुरानी काव्यात्मक छवि है, किसी स्त्री के शरीर या आकर्षण को वास्तविक अपराध का प्रमाण मानने का नियम नहीं।

After hearing about Amalaki, Yudhishthira asks Krishna the name of Chaitra's dark-fortnight Ekadashi. Krishna recounts Lomasha's answer to Mandhata. Seeking the people's welfare, Mandhata asks its name, observance and fruit. Lomasha names Papmochani and praises it in religious terms as removing the pishacha condition and granting desired fruits, accomplishment, auspiciousness and righteousness.

Spring brings bees to Chaitraratha forest. Apsaras, Gandharva maidens and Kinnaras enjoy music; gods led by Indra also delight there. The forest is described as exceptionally pleasant, while many sages practise austerity there. The celibate Medhavi lives there. Manjughosha, an apsara, intends to attract him but, afraid, stays one krosha from the hermitage, singing sweetly and playing the vipanchika. Flowers and sandalwood adorn her; krosha is not converted into a modern distance or travel route.

Mind-born Kama intends to overcome sages devoted to Shiva. Her body becomes his martial metaphor: eyebrows form the bow's ends, sidelong glances its string, eyes with eyelashes its arrows, and her chest the battle pavilion. Manjughosha is called Kama's army. This old poetic image is not a rule making a woman's body or attraction evidence of an actual crime.

सम्बन्ध, भय और बीता समय

KATHA 6.46.15–27

मेधावी को देखकर मंजुघोषा भी काम से व्याकुल होती हैं। युवा मेधावी श्वेत यज्ञोपवीत पहने दूसरे काम जैसे शोभित हैं और च्यवन के शुभ आश्रम में रहते हैं। मंजुघोषा धीरे गाती हैं; कंगन, पायल और करधनी की ध्वनियाँ सुनाई देती हैं। काम और उसकी सेना ऋषि को मोह में डालते हैं। मंजुघोषा संकेतों और कटाक्षों से पास आती हैं, वीणा नीचे रखकर उन्हें वैसे आलिंगन करती हैं जैसे हवा से हिलते वृक्ष को लता घेरे। मेधावी भी उनके साथ आनंद लेते हैं।

ऋषि की शिव-स्मृति और साधना इच्छा में खो जाती है। दिन, रात और वर्ष का ध्यान नहीं रहता; आचरण की मर्यादा टूटते हुए बहुत समय बीतता है। मंजुघोषा अपने दिव्य लोक लौटना चाहती हैं और जाने की अनुमति माँगती हैं। मेधावी कहते हैं कि वह अभी संध्या में आई हैं, सुबह की संध्या तक रुकें। शाप के भय से वह फिर उनके साथ वर्षों रहती हैं। यह भय कथा का स्पष्ट अंग है, किसी को संबंध में रोके रखने का औचित्य नहीं।

इकाई 27 में पचपन वर्ष, नौ महीने और तीन दिन का समय है, जो ऋषि को आधी रात जितना लगता है। आगे इकाई 33 में सत्तावन वर्ष आएँगे। दोनों संख्याएँ स्रोत में हैं; यहाँ उनके लिए नई गणना या मनगढ़ंत मेल नहीं बनाया गया। दोनों पात्रों के आचरण वाला प्रसंग केवल स्त्री पर जिम्मेदारी डालने का आधार नहीं।

Seeing Medhavi, Manjughosha too is troubled by desire. Young Medhavi, wearing a white sacred thread, resembles another Kama and lives at Chyavana's auspicious hermitage. She sings softly, with bracelets, anklets and waist-bells sounding. Kama and his army bewilder him. Approaching with gestures and glances, she sets down her veena and embraces him like a creeper around a wind-shaken tree. Medhavi also takes pleasure in their company.

The sage's remembrance of Shiva and disciplined practice give way to desire. He loses awareness of days, nights and years; much time passes as his discipline fails. Manjughosha wants to return to her divine world and asks permission to leave. Medhavi says she arrived only this evening and should remain until his morning observance. Afraid of his curse, she stays with him for years more. That fear is explicit in the narrative, not justification for preventing someone from leaving a relationship.

Unit 27 gives fifty-five years, nine months and three days, experienced by him as half a night. Unit 33 later gives fifty-seven years. Both figures remain as transmitted; no new calculation or invented reconciliation is supplied. A relationship involving both characters does not justify assigning responsibility solely to the woman.

शाप, निवेदन और पापमोचनी का नाम

KATHA 6.46.28–41

मंजुघोषा फिर कहती हैं कि उन्हें घर जाना है। मेधावी सुबह होने की बात कहकर शाम की संध्या तक रुकने को कहते हैं। वह प्रसन्न होकर हल्की हँसी के साथ पूछती हैं कि संध्या इतनी लंबी कैसे हुई और बीते समय की गणना करने को कहती हैं। आश्चर्य से ऋषि समय गिनते हैं: अब सत्तावन वर्ष बताए गए हैं। फिर वे क्रोधित होते हैं; ज्वाला, आँखों से चिंगारी और काँपते होंठ उनकी उत्तेजना की काव्यात्मक छवियाँ हैं।

मेधावी अपनी कठिन तपस्या नष्ट होने का दोष मंजुघोषा पर डालकर उन्हें पिशाची होने का शाप देते हैं और अपमानजनक, स्त्री-केंद्रित आरोप कहते हैं। उन आरोपों को यहाँ समर्थन या व्यवहार की सीख नहीं बनाया गया। शाप से पीड़ित मंजुघोषा झुककर उसे शांत करने का निवेदन करती हैं। स्रोत के सप्तभिः पदैः में अच्छे लोगों की थोड़े से पदों या साथ के कदमों से भी बनने वाली मैत्री का भाव है; अंग्रेज़ी तुलना सात कदम या सात शब्द देती है। इतने वर्षों का साथ याद दिलाकर वह कृपा माँगती हैं।

ऋषि फिर तपस्या नष्ट होने का आरोप लगाते हैं, लेकिन राहत का उपाय भी बताते हैं: चैत्र कृष्ण पक्ष की पापमोचनिका एकादशी का व्रत करने पर कथा में उनकी पिशाची अवस्था दूर होगी। यह पापमोचनी का ही चयनित नाम-रूप है, अलग पर्व नहीं। इसके बाद मेधावी अपने पिता के आश्रम चले जाते हैं। शाप, लांछन और स्त्री को अकेला दोषी बनाने की भाषा प्राचीन कथा के भीतर है; वास्तविक दबाव, अपमान या हिंसा उचित नहीं होते।

Manjughosha again says she must go home. Calling it morning, Medhavi asks her to stay until his evening observance. Pleased and smiling slightly, she asks how that observance has become so long and requests a reckoning of elapsed time. Astonished, he calculates: the figure is now fifty-seven years. Anger follows; flames, sparks from his eyes and trembling lips are poetic images of his agitation.

Blaming her for the loss of his hard-earned austerity, Medhavi curses her to become a pishachi and voices degrading, gendered accusations. Those accusations are neither endorsed nor taught as conduct. Distressed by the curse, she bows and requests relief. The source's saptabhih padaih invokes friendship among good people arising even through a few padas or shared steps; the English comparison offers seven steps or seven words. Recalling their many years together, she appeals for kindness.

The sage repeats his accusation about lost austerity but also identifies relief: observing Chaitra's dark-fortnight Papmochanika Ekadashi will, within the account, remove her pishachi condition. Papmochanika is the selected name-form of Papmochani, not a separate festival. He then goes to his father's hermitage. Cursing, degrading accusations and blaming only the woman remain part of the ancient account; actual coercion, humiliation or violence is not justified.

दो अलग व्रत और पूरा समापन

KATHA 6.46.42–49

पिता च्यवन लौटे हुए मेधावी से पूछते हैं कि उन्होंने अपना पुण्य क्यों नष्ट किया। मेधावी मानते हैं कि उन्होंने अप्सरा के साथ आनंद लिया और प्रायश्चित्त पूछते हैं। पिता चैत्र कृष्ण पापमोचनी बताते हैं। मेधावी वह व्रत

करते हैं और कथा में उनका पाप मिटकर तप का बल लौटता है। मंजुघोषा भी अपने लिए वही व्रत करती हैं; पिशाची अवस्था से मुक्त होकर दिव्य रूप में स्वर्ग लौटती हैं। दोनों का अलग सुधार है, नया पुनर्मिलन नहीं।

लोमश राजा से पूरा फल-वचन कहते हैं: व्रत करने वालों का पाप नष्ट होता है और कथा पढ़ने या सुनने का फल हजार गायों के दान के समान कहा गया है। अंतिम पद ब्रह्महत्या, सोना चुराना, सुरा-पान और गुरु की पत्नी से यौन सम्बन्ध जैसे पुराने धार्मिक अपराध-वर्गों के लिए भी पाप-मुक्ति और महान पुण्य कहते हैं। ये ऐतिहासिक धार्मिक श्रेणियाँ हैं, जाति-आधारित मूल्यांकन या वास्तविक अपराध के न्याय और सुधार को मिटाने की अनुमति नहीं।

अलग समापन इसे पद्म महापुराण की पचपन हजार वाली संहिता के उत्तर खंड, उमापति–नारद संवाद में चैत्र कृष्ण पापमोचनी का अध्याय 46 कहता है। कृष्ण का बाहरी उत्तर, मान्धाता–लोमश की चर्चा, पूरा मेधावी–मंजुघोषा प्रसंग, पिता का परामर्श और अंतिम फल-वचन सहित सभी 49 क्रमांकित इकाइयाँ इस मूल संक्षिप्त गद्य में पूरी हैं।

पिशाच और मुक्ति की भाषा धार्मिक आख्यान है, किसी व्यक्ति के रोग, संकट या व्यवहार का निदान नहीं। न भोजन-पानी रोकना अनिवार्य है, न व्रत से स्वास्थ्य, धन या परलोक का निश्चित फल मिलता है। सुरक्षित विश्राम, देखभाल, स्वतंत्र निर्णय और हानि की जिम्मेदारी बनी रहती है। तिथि जुड़े उत्सव-पृष्ठ पर है; यहाँ नया पारण या घड़ी का समय नहीं निकाला गया।

Chyavana asks his returning son why he has lost his merit. Medhavi acknowledges taking pleasure with an apsara and asks for atonement. His father identifies Chaitra's dark Papmochani. Medhavi observes it, and the narrative restores his austerity after removing his wrongdoing. Manjughosha independently observes the same vow, loses the pishachi condition, regains her divine form and returns to heaven. These are separate restorations, not an added reunion.

Lomasha gives the king the full benefit discourse: observers' wrongdoing is removed, and reading or hearing the account is praised as equivalent to giving a thousand cows. The closing units also name brahmahatya, stealing gold, drinking sura and sexual relations with the teacher's wife as historical religious categories of wrongdoing subject to the vow's praised release and great merit. These categories do not authorise caste-based judgment or erasure of justice and practical repair for real offences.

The separate colophon identifies chapter 46 as Chaitra's dark Papmochani in the Umapati–Narada dialogue of the Padma Mahapurana's fifty-five-thousand collection, Uttara Khanda. All 49 numbered units are covered in original condensed prose: Krishna's outer answer, Mandhata–Lomasha's discussion, the entire Medhavi–Manjughosha episode, the father's counsel and the closing merit statements.

Pishacha and liberation language belongs to religious narrative, not diagnosis of someone's illness, hardship or behaviour. Withholding food or water is not mandatory; no health, wealth or afterlife outcome is guaranteed. Safe rest, care, independent choice and accountability for harm remain. The linked festival hub owns the date; no new parana or clock time is calculated here.

Source licence notice (it travels with every copy of this text):

Papmochani Ekadashi Katha — adapted from Sanskrit Wikisource contributors, Padma Purana 6.46.1–49, revision 336427, linked in Sources. Electronic source: CC BY-SA 4.0, https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/ . Changes: original condensed Hindi prose, full Roman-Hindi and English renditions, summaries and contextual notices by Valkala Editorial (2026). These adaptations are distributed under CC BY-SA 4.0. No source endorsement implied. This licence covers the retelling and its language layers, not unrelated code or site content. No modern Wisdomlib translation is included.
Copyright 2026 Valkala Editorial (original adaptations); shared under CC BY-SA 4.0. Attribution remains Sanskrit Wikisource contributors.